ISSN: 2455 - 927X

EIJO: Journal of Humanities, Social Affair, Management and Innovative Research (EIJO– JHSAMIR)

Einstein International Journal Organization (EIJO)

Available Online at: www.eijo.in

Volume – 9, Issue – 3, May - June - 2024, Page No. : 01 – 07

रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा स्वामी विवेकानंद की शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन

नीतू शर्मा, हिन्दी विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

प्रस्तावना

रवीन्द्रनाथ टैगोर को दर्शनशास्त्र में सार्वभौमिक धर्म के विचार को लाने वाले बहुत ही प्रतिष्ठित आरंभकर्ताओं में से एक माना जाता है, उन्होंने अपने प्रभावशाली कार्य 'रिलीजन ऑफ मैन' के माध्यम से सार्वभौमिक धर्म की अवधारणा को लोगों और दर्शनशास्त्र के क्षेत्र तक पहुंचाया। उनका धार्मिक दर्शन पूर्णतः मानव केन्द्रित है। विवेकानन्द का दर्शन अद्वैत वेदांत के दर्शन का सख्ती से पालन करना है और उन्होंने स्वीकार किया कि वेदांत का धर्म शुद्ध है। वेदान्तिक धर्म कभी भी किसी अन्य धर्म का खण्डन नहीं करता। उन्होंने दावा किया कि उपनिषद, या वेदांत, या आरण्यक, या रहस्य, वेदों के इस भाग का नाम है। यहां हम पाते हैं कि धर्म ने सभी बाहरी औपचारिकताओं से छुटकारा पा लिया है। यहाँ हम पाते हैं कि आध्यात्मिक बातें पदार्थ की भाषा में नहीं, बल्कि आत्मा की भाषा में बताई जाती हैं।

मुख्य-शब्द: धार्मिक दर्शन, भारतीय दर्शन और संस्कृति, अन्तर्यामी

शोध कार्य की विधि

इस कार्य में अन्वेषक स्वामी विवेकानन्द और रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचार और व्यवहारवर्तमान सन्दर्भ में उनके महत्व एवं महत्ता को जानने की दृष्टि सेदार्शनिक पद्धति अपनाकर वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करेगा । हालाँकि अध्ययन का शीर्षक इसे चिह्नित कर सकता हैशिक्षा दर्शन के क्षेत्र के अंतर्गत अन्वेषक ने इसे सामाजिक दृष्टि से देखा है ।विवेकानन्द और रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचार वर्तमान की कई समस्याओं का समाधान करेंगेभारत इस तथ्य के आलोक में कि वे 19वीं और 20वीं में सामाजिक-राजनीतिक प्रेरणा के वास्तविक स्रोत थे। शोध का जोर स्वामी विवेकानन्द और रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों में भारतीय दर्शन और संस्कृति के आलोक का अध्ययन करने पर रहा है ।राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा को एक उपकरण के रूप में उपयोग करने के उनके विचार और तरीके भी एक हैं। अध्ययन में एक माध्यम के रूप में शिक्षा के उनके उपयोग को भी शामिल किया गया है। शोधकर्ता ने इसमें अपनाई जाने वाली विधियों को भी शामिल किया है। इस अध्ययन में अपनाई गई शोध पद्धति विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक है।इन दोनों प्रमुख हस्तियों के शिक्षा पर अपने-अपने स्वतंत्र विचार थे।

शोधपरिणाम

रवीन्द्रनाथ टैगोर और स्वामी विवेकानन्द का धार्मिक दर्शन: तुलनात्मक अध्ययन

रवीन्द्रनाथ टैगोर को दर्शनशास्त्र में सार्वभौमिक धर्म के विचार को लाने वाले बहुत ही प्रतिष्ठित आरंभकर्ताओं में से एक माना जाता है, उन्होंने अपने प्रभावशाली कार्य 'रिलीजन ऑफ मैन' के माध्यम से सार्वभौमिक धर्म की अवधारणा को लोगों और दर्शनशास्त्र के क्षेत्र तक पहुंचाया। उनका धार्मिक दर्शन पूर्णतः मानव केन्द्रित है। कोई भी व्यक्ति यह महसूस कर सकता है कि उसका सर्वोच्च स्व उसके भीतर मौजूद है। धर्म शब्द के संबंध में टैगोर ने अपने असाधारण कार्य 'साधना: द रियलाइजेशन ऑफ ट्रुथ' में कहा है कि संस्कृत शब्द धर्म, जिसे आमतौर पर अंग्रेजी में रिलीजन के रूप में अनुवादित किया जाता है, का हमारी भाषा में गहरा अर्थ है। धर्म सभी चीजों का अंतरतम स्वभाव, सार, अंतर्निहित सत्य है(टैगोर, 1915, पृ.43)। उन्होंने हमेशा लोगों के लिए अच्छा सोचा और लोगों को किसी के धर्म को लेकर बने अंधविश्वासों से मुक्त कराने का प्रयास किया। उन्होंने लोगों को तार्किक रूप से सोचने का प्रयास किया और समकालीन भारतीय दर्शन में विशिष्ट तरीकों का प्रदर्शन किया।

टैगोर बहुत कम उम्र से ही उपनिषदों की शिक्षा से बेहद प्रभावित थे और यह उनके दार्शनिक जीवन के निर्माण का प्रमुख साधन था। उपनिषदों के अलावा वैष्णव धर्म, ब्रह्म समाज, भगवत गीता का भी टैगोर पर काफी प्रभाव पड़ा। उनके विद्वतापूर्ण या दार्शनिक विकास को कुछ अन्य आधारों से भी समर्थन मिला, जैसे-आधुनिक पश्चिमी विचार, संस्कृति और साहित्य, ईसाई धर्म, ब्रह्म समाज का मानवतावादी दर्शन, आदि वैदिक विचार। हिंदू धर्म के प्रति उनका दृष्टिकोण तत्वों का मिश्रण था। ब्रह्म समाज उनके जीवन के सबसे स्थायी प्रभावों में से एक था। महानतम बुद्ध और राजा राम मोहन राय ऐसे लोग थे जिनका प्रभाव टैगोर के जीवन और कार्यों में भी देखा जाता है। उन्हें आस्तिक दार्शनिक माना जाता है। वह ईश्वर या ईश्वर में जो वास्तविकता है उसे ही वास्तविकता मानते है। उनके अनुसार, ईश्वर संसार से पारलौकिक अलगाव में एक अमूर्त वस्तु नहीं है। लेकिन, वह अन्तर्यामी भी है और परे भी।

टैगोर ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक रिलिजन ऑफ मैन में कहा है कि धर्म के बारे में मेरी धारणा एक कवि के धर्म के समान है। उनके शब्दों में, "मेरा धर्म मूल रूप से एक कवि का धर्म है। इसका स्पर्श मुझे उन्हीं अनदेखे और ट्रैकलेस चैनलों के माध्यम से मिलता है, जैसे मेरे संगीत की प्रेरणा। मेरे धार्मिक जीवन ने विकास की उसी रहस्यमय रेखा का अनुसरण किया है, जैसा कि मेरे काव्य जीवन ने किया है। किसी तरह वे एक-दूसरे से शादी कर चुके हैं, और उनकी सगाई के समारोह की लंबी अवधि के दौरान, यह मुझसे गुप्त रखा गया था।" (टैगोर, 1978, पृष्ठ 5)

ईश्वर सृष्टिकर्ता है, एकता का सिद्धांत है। वह स्वभाव से ही अन्तर्यामी है और उसे बुद्धि या तर्क द्वारा पकड़ा नहीं जा सकता। उसकी रचना उसकी या ईश्वर की अभिव्यक्ति है। मनुष्य भगवान का प्रतिरूप है। टैगोर अपने दर्शन में प्रकृति और मानव स्व के सामंजस्यपूर्ण संबंध का वर्णन करते हैं। ईश्वर इस ब्रह्मांड और हमारे अस्तित्व का मूल है। टैगोर ईश्वर को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में गहराई से देखते हैं जो स्वयं को एक इंसान के रूप में प्रकट करता है। उनके लिए ईश्वर वह व्यक्ति है जो मनुष्य या मानव जीवन से सदैव जुड़ा रहता है। वह ईश्वरीय प्राप्ति के साधन के रूप में भक्ति की वैष्णववाद की अवधारणा की भी प्रशंसा करते हैं। हम ईश्वर के अस्तित्व को महसूस कर सकते हैं इसीलिए उन्होंने व्यक्तिगत अनुभूति पर जोर दिया है।

उन्होंने जोर देकर कहा कि मनुष्य अनंत के संपर्क को महसूस कर सकता है लेकिन अनंत को प्राप्त नहीं कर सकता। वह मनुष्य को सर्वोच्च व्यक्ति मानते है, प्रकृति की एकता का अंतिम स्रोत और भावना है। यह एक ऐसा ही तथ्य है जो प्रकृति और व्यक्ति में व्यक्त होता है।प्रेम टैगोर के धार्मिक दर्शन का केंद्रीय विषय है। वह वैष्णववाद की आध्यात्मिक अनुभूति की अवधारणा में भी विश्वास करते हैं, जो प्रेम और भक्ति के गुण से संभव है। प्रेम जीवन में सब कुछ पाने की कुंजी है। उन्होंने जोर देकर कहा कि मूलतः मनुष्य न तो स्वयं का गुलाम है और न ही संसार का, बल्कि वह एक प्रेमी है। उसकी स्वतंत्रता और पूर्णता प्रेम में है, जो पूर्ण समझ का दूसरा नाम है, अपने अस्तित्व की इस व्याप्ति के साथ, वह सर्वव्यापी आत्मा के साथ एकजुट हो जाता है, जो उसकी आत्मा की सांस भी है। जहां एक व्यक्ति दूसरों को धक्का देकर और खुद को ऊंचा उठाने की कोशिश करता है, एक ऐसी विशिष्टता हासिल करने की कोशिश करता है जिसके द्वारा वह खुद को हर किसी से अधिक होने पर गर्व करता है, वहां वह उस भावना से अलग हो जाता है। यही कारण है कि उपनिषद उन लोगों का वर्णन करते हैं जिन्होंने मानव जीवन के लक्ष्य को "शांतिपूर्ण" और "ईश्वर के साथ एकाकार" के रूप में प्राप्त किया है, जिसका अर्थ है कि वे मनुष्य और प्रकृति के साथ पूर्ण सामंजस्य में हैं, और इसलिए ईश्वर के साथ अविभाजित एकता में हैं।

(टैगोर, 1915)। "प्रेम सर्वोच्च आनंद है जिसे मनुष्य प्राप्त कर सकता है, इसके माध्यम से ही वह वास्तव में जानता है कि वह स्वयं से अधिक है और वह सभी के साथ एक है।" (टैगोर, 1915, पृ.65)। वास्तविक प्रकृति के बारे में हमारे अपर्याप्त ज्ञान के कारण बुराई प्रकट होती है। उन्होंने सदैव लोगों को धर्म के पालन में स्वतंत्रता का अनुभव कराने का प्रयास किया। उसके लिए ईश्वर के प्रेम के बिना मानव जीवन दुख, कष्ट आदि से भरा है। अत: भगवान के प्रेम की प्राप्ति ही मनुष्य की अंतिम इच्छा होनी चाहिए। उनका विचार है कि कोई व्यक्ति अपनी कल्पना

© 2024 EIJO, All Rights Reserved

में परम पुरुष को महसूस तो कर सकता है लेकिन उस सत्ता से बना नहीं जा सकता। हमारा आत्म ईश्वरीय है और यह ईश्वर से अलग नहीं है। ईश्वर अनंत है और हमारे सीमित स्व का एक हिस्सा है। ईश्वर ने अपनी सारी क्षमताएं मनुष्य पर डाल दीं और उसकी सर्वोच्च रचना मनुष्य है। हमारा स्वंय हमारे भीतर ईश्वर का वास है। वह मानते हैं कि मनुष्य के अंदर ब्रह्म बनने के सभी गुण समाहित हैं।

टैगोर का संपूर्ण धार्मिक दर्शन मनुष्य की अवधारणा में निहित है। टैगोर द्वारा अपने दर्शन में प्रयुक्त सबसे प्रसिद्ध और अद्वितीय शब्दों में से एक 'जीवन देवोटा' है। 'जीवन देवोता' शब्द से उनका तात्पर्य जीवन के देवता से है, जो मनुष्य के हृदय में निवास करते हैं। यह शब्द ईश्वर के विशेष और व्यक्तिगत नाम की गहरी समझ को इंगित करता है, जो फिर से स्वयं को बदल देता है। भगवान के बारे में टैगोर की दार्शनिक अवधारणा अद्वैत वेदांत के मानवतावाद के समान है, जो हमेशा मनुष्य के भीतर रहता है। मनुष्य के हृदय में देवता निवास करते हैं। जीवन भक्ति मनुष्य में ईश्वर है और मनुष्य का सर्वोच्च स्वरूप है। जीवन देवोता वास्तव में अनंत निरपेक्षता का संकेत नहीं देता है। ईश्वर को विश्वपुरुष आदि अनेक नामों से पुकारा जाता है। वे वैदिक विचारधारा से भी प्रभावित थे।

वह एक ऐसे व्यक्ति थे, जिनके मन में मनुष्य के प्रति पूरा सम्मान और प्रेम था। वह प्रकृति को मनुष्य के लिए सबसे पवित्र स्थान या तीर्थस्थल मानता है। अपने धार्मिक दर्शन के माध्यम से, टैगोर पूर्ण या ब्रह्म और मनुष्य के साथ-साथ प्रकृति और मनुष्य के बीच एक बहुत स्पष्ट और शुभ संबंध का वर्णन करते हैं। वह मानवतावाद के दार्शनिक थे। टैगोर की मुख्य दिशा व्यक्तिगत ईश्वर की संतुष्टि गीता का दर्शन है।

उन्होंने फिर से वैष्णववाद के मूल विचार का पालन किया कि प्रेम सीमित और अनंत दोनों को निरंतर जोड़ने की कुंजी है। वे दोनों एक-दूसरे पर निर्भर हैं और अनंत काल तक बंधे हुए हैं।टैगोर ने अपने धार्मिक दर्शन में सर्वोच्च स्व को परमात्मा या ब्रह्मा के रूप में माना। किंवदंतियों के शब्दों में, "हमारा आत्म माया है जहां यह केवल व्यक्तिगत और सीमित है, जहां यह पृथकता को पूर्ण मानता है, यह सत्यम है जहां यह सार्वभौमिक और अनंत में अपने सार को पहचानता है, सर्वोच्च स्व में, यह परमात्मा है "। (टैगोर, 1931, पृ.57) अत: परमात्मा ब्रह्म है।

आत्म-बोध भी टैगोर के जीवन और दर्शन का एक महत्वपूर्ण विषय है। उनका आत्म-साक्षात्कार में गहरा विश्वास था जो एक मनुष्य कर सकता है। उनके लिए मनुष्य की पूजा ईश्वर की पूजा के समान है। दूसरे शब्दों में मनुष्य की सेवा ही ईश्वर की पूजा मानी जाती है। उन्होंने धर्म को किसी समूह में बाँटकर नहीं रखा। कोई भी जाति और कोई भी संस्था, उनका कहना है कि हिंदू, मुस्लिम या ईसाई होना अवसर का विषय है। यह एक तथ्य है कि प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष परिवार में जन्म लेता है और समाज में कुछ विशिष्ट परंपराओं और जीवन स्तर का पालन करके उसी तरह से पालन-पोषण करता है। उदाहरण के लिए- एक हिंदू, एक हिंदू परिवार के नियम और विनियमों का पालन करता है। हालाँकि, यह उस व्यक्ति का तथ्यात्मक धर्म नहीं है। क्योंकि उन नियमों और विनियमों का अभ्यास करने से वह व्यक्ति आत्म-साक्षात्कार करने में सक्षम नहीं हो सकता है। सच्चे धर्म का अर्थ स्वयं की सर्वोच्चता को पहचानना, आत्म-चेतना उत्पन्न करना और चयन की स्वतंत्रता प्रस्तुत करना है। मेरा जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ था जो हमारे देश में उपनिषदों में भारतीय ऋषियों के कथन पर आधारित धर्म के पुनरुद्धार में अग्रणी था। लेकिन अपने अजीब स्वभाव के कारण, मैं किसी भी धार्मिक शिक्षा को केवल इस आधार पर स्वीकार नहीं कर सका कि मेरे आस-पास के लोग इसे सच मानते थे। मैं खुद को यह कल्पना करने के लिए राजी नहीं कर सका कि मेरे पास धर्म सिर्फ इसलिए था क्योंकि मैं इसके मूल्य पर विश्वास कर सकता था। "(टैगोर, 1978, पृ.5)

टैगोर का विचार है कि एक व्यक्ति को अपना धर्म चुनने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए या उसे पहले उसे जानने का मौका मिलना चाहिए। स्वयं का एहसास करना अपनी मर्दानगी का एहसास करना माना जाता है। मनुष्य का स्वभाव रचनात्मक है और यही रचनात्मक शक्ति ही उस मनुष्य का सच्चा धर्म कहलाती है। मनुष्य अपने जीवन के आंतरिक सत्य को धर्म के माध्यम से व्यक्त करता है।

© 2024 EIJO, All Rights Reserved

इसका मतलब है कि उसके पास खुद को आध्यात्मिक प्राणी के रूप में जानने की आंतरिक शक्ति है। टैगोर कई मायनों में और कई स्तरों पर सार्वभौमिकतावादी थे। उन्होंने अपनी हिंदू परंपरा और अपने राष्ट्रवादी हमवतन लोगों के उग्रवादी और पदानुक्रमित धर्म का विरोध किया, जिसमें सत्य और अहिंसा का सार्वभौमिक, समतावादी धर्म शामिल था। उन्होंने राष्ट्र, धर्म, जाति, नस्ल, क्षेत्र और जातीयता की सांप्रदायिक पहचान का विरोध किया और पहचान की इस राजनीति के खिलाफ परोक्ष रूप से "अन्यता की राजनीति" का आह्वान किया। उन्होंने अपनी नैतिकता और राजनीति को कानूनीवाद या समूह संकीर्णता पर नहीं, बल्कि सहानुभूति पर आधारित करने की कोशिश की। (होगन और पंडित, 2003, पृष्ठ 17)।

टैगोर को सृजन के विचार का बहुत गहराई से एहसास था। उनके लिए, सृष्टि को ब्रह्मांड के हिस्से के निरंतर आत्म-समर्पण के माध्यम से प्राप्त करने योग्य बनाया गया है। और मनुष्य की दिव्य रचना भी व्यक्ति इकाइयों से सदैव आत्म-परित्याग बनाए रखती है। यह आध्यात्मिक विकास उतना आसान नहीं है जितना कि भौतिक जगत में भौतिक विकास।

स्वामी विवेकानन्द का धार्मिक दर्शन

विवेकानन्द का दर्शन अद्वैत वेदांत के दर्शन का सख्ती से पालन करना है और उन्होंने स्वीकार किया कि वेदांत का धर्म शुद्ध है। वेदान्तिक धर्म कभी भी किसी अन्य धर्म का खण्डन नहीं करता। उन्होंने दावा किया कि उपनिषद, या वेदांत, या आरण्यक, या रहस्य, वेदों के इस भाग का नाम है। यहां हम पाते हैं कि धर्म ने सभी बाहरी औपचारिकताओं से छुटकारा पा लिया है। यहाँ हम पाते हैं कि आध्यात्मिक बातें पदार्थ की भाषा में नहीं, बल्कि आत्मा की भाषा में बताई जाती हैं। ("स्वामी विवेकानन्द के संपूर्ण कार्यों से चयन", 1991, पृष्ठ 245) जैसा कि उन्होंने उद्धृत किया, धर्म, "उन सभी शक्तियों में से जिन्होंने मानव जाति की नियति को ढालने के लिए काम किया है और अभी भी काम कर रहे हैं, कोई भी, निश्चित रूप से, उनसे बढ़कर नहीं है" उससे भी अधिक शक्तिशाली, जिसकी अभिव्यक्ति को हम धर्म कहते हैं।" (विवेकानंद, 2015, पृ.1) यहां, उन्होंने धर्म की शक्ति के बारे में इस प्रकार बात की - सभी सामाजिक संगठनों की पृष्ठभूमि में कहीं न कहीं उस विशिष्ट शक्ति की कार्यप्रणाली होती है, और मानव इकाइयों के बीच अब तक का सबसे बड़ा एकजुट आवेग सामने आया है (विवेकानंद, 2015, पृ.1)।

प्रत्येक प्रतिष्ठित धर्म तीन अवधारणाओं पर आधारित है और ये अवधारणाएँ क्रमशः हैं- दर्शन, पौराणिक कथा और अनुष्ठान। धर्म की पहली अवधारणा में, विवेकानन्द ने सार्वभौमिक धर्म को एक शाश्वत धर्म बताया जो मनुष्य की धार्मिक चेतना को प्रदर्शित करता है। विभिन्न धर्मों की धार्मिक चेतना अलग-अलग स्थानों पर देखी जा सकती है। उन्होंने सार्वभौमिक धर्म की तुलना विज्ञान से की और यह विचार दिया कि यह विज्ञान के समान, एक और अद्वितीय है। दूसरी अवधारणा में उन्होंने सार्वभौमिक धर्म को आध्यात्मिक धर्म के रूप में स्थापित किया। तीसरी अवधारणा में, उन्होंने धर्म के गतिशील चरित्र पर प्रकाश डाला और उल्लेख किया कि सार्वभौमिक धर्म वह धर्म है जहां दुनिया के सभी धर्म संपूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए पूरी स्वतंत्रता के साथ एक दूसरे के साथ संवाद कर सकते हैं। इस प्रकार विवेकानन्द एक मानवतावादी दार्शनिक भी बन गये।

स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो धर्म संसद में सबसे पहले पश्चिम के लिए धर्मों के सामंजस्य के अपने विचार को पेश किया और प्रचारित किया और उन्होंने तीन परिणाम जोड़े। ये हैं-

1. विश्व के धर्म परस्पर पूरक हैं, विरोधाभासी नहीं
2. किसी दूसरे के लिए अपना धर्म बदलने की कोई आवश्यकता नहीं है
3. अपने धर्म पर स्थिर रहते हुए दूसरे धर्मों के सर्वोत्तम तत्वों को स्वीकार करना और आत्मसात करना ही आदर्श दृष्टिकोण है। (भजानंद, 2008, पृ.36-37)

© 2024 EIJO, All Rights Reserved

हालाँकि सामाजिक वैज्ञानिकों ने धर्म को एक सार्वभौमिक घटना के रूप में माना है, लेकिन धर्म के बारे में उनकी अवधारणा बहुत ही निम्न है, जो पौराणिक कथाओं, अनुष्ठानों, संस्थानों आदि पर आधारित है, स्वामी विवेकानन्द ने एक सार्वभौमिक घटनाके रूप में धर्म की बहुत ऊँची अवधारणा दी है। उन्होंने धर्म की पहचान पारलौकिक आध्यात्मिक चेतना, उस चेतना को प्राप्त करने के लिए मनुष्य के संघर्ष और उसके अनुभव से की। मानवता की इसी सार्वभौमिक आध्यात्मिक चेतना को स्वामीजी ने सार्वभौम धर्म कहा (भजानंद, 2008, पृ.41)।विवेकानंद हिंदू धर्म और धार्मिक बहुलवाद के सबसे बड़े प्रशंसक थे। लेकिन उन्होंने कभी नहीं कहा कि अन्य धर्म हिंदू धर्म से कमतर हैं। हिंदू धर्म ने आध्यात्मिकता पर जोर दिया, ईसाइयों ने आत्म-शुद्धि आदि पर। मनुष्य के रूप में, धर्म की इस विविध दुनिया में एकता की तलाश करना हमारा कर्तव्य है। वे कुछ मायनों में भिन्न हैं लेकिन उनमें कुछ सामान्य कारक भी हैं, जैसे-उदाहरण-प्रत्येक धर्म परम वास्तविकता के बारे में बात करता है जिसे ईश्वर कहा जाता है। फिर, हालाँकि हम सभी इंसान हैं लेकिन फिर भी हमारे पास पुरुष और महिला का वर्गीकरण है।

सार्वभौमिक धर्म की संकीर्ण अवधारणा के विपरीत, स्वामीजी की अवधारणा एक व्यापक, वास्तव में सार्वभौमिक अवधारणा है। स्वामीजी की अवधारणा विश्व के सभी धर्मों को समाहित करती है। यह सार्वभौमिक सिद्धांतों पर आधारित है और धर्मों के बीच पाए जाने वाले विरोधाभासों का समाधान करता है। हालाँकि, यह व्यापक रूप से ज्ञात नहीं है कि स्वामीजी ने सार्वभौमिक धर्म की तीन अवधारणाएँ दी हैं। (भजानंद, 2008. पृ.39) विवेकानन्द के धार्मिक दर्शन में धर्म को मानव मन की सर्वोच्च प्रेरक शक्ति बताया गया है। इस आध्यात्मिक ऊर्जा से किसी भी चीज़ की तुलना नहीं की जा सकती जिसके माध्यम से कोई अनंत का एहसास कर सकता है।

स्वामीजी ने सार्वभौमिक धर्म की पहचान हिंदू धर्म की तरह किसी विशेष धर्म के रूप में नहीं की (हालाँकि उन्होंने दुनिया भर के सभी लोगों के लिए अपने दरवाजे खोलकर हिंदू धर्म को एक सार्वभौमिक धर्म बना दिया) बल्कि मानवता की सामान्य आध्यात्मिक विरासत के रूप में पहचाना। उन्होंने विश्व धर्मों को मानवता की सार्वभौमिक आध्यात्मिक चेतना की अभिव्यक्ति के रूप में देखा। (भजानंद, 2008. पृष्ठ 41) अपने बहुमूल्य कार्य ज्ञान योग में विवेकानन्द ने कहा है कि "जैसे-जैसे मानव मस्तिष्क विस्तृत होता है, उसके आध्यात्मिक कदम भी विस्तृत होते जाते हैं। वह समय पहले ही आ चुका है जब कोई व्यक्ति किसी विचार को रिकॉर्ड नहीं कर सकता है। बिना इसे पृथ्वी के कोने-कोने तक पहुंचाए; केवल भौतिक साधनों से, हम पूरी दुनिया के संपर्क में आ गए हैं; इसलिए दुनिया के भविष्य के धर्मों को उतना ही सार्वभौमिक, उतना ही व्यापक बनना होगा। (विवेकानंद, 2015)

तुलनाएँ: मतभेद: टैगोर और विवेकानन्द के धार्मिक दर्शन में मुख्यतः निम्नलिखित बिन्दुओं पर मतभेद देखे जा सकते हैं:

1. रवीन्द्रनाथ टैगोर की धर्म की अवधारणा किसी संस्थागत धर्म पर आधारित नहीं है। उनका धर्म मनुष्य का धर्म माना जाता है। उनके लिए मनुष्य ईश्वर की छवि है और मनुष्य की सेवा ईश्वर की सेवा है। उन्होंने कभी भी किसी विशेष धर्म के बारे में बात नहीं की जिसका लोग पालन कर सकें या अभ्यास कर सकें। दूसरी ओर, स्वामी विवेकानन्द का धर्म एक सार्वभौम धर्म है जो विश्व धर्म के आचरण का एक साझा मंच है। उन्होंने हिंदू धर्म के बारे में भी बात की और दिखाया कि कैसे हिंदू धर्म लोगों के लिए अच्छा धर्म हो सकता है।

2. टैगोर का धर्म दर्शन मूलतः एक एकेश्वरवादी धर्म है जबकि विवेकानन्द का धर्म दर्शन उनके धर्म में बहुलवाद की अवधारणा का अनुसरण करता है।

3. टैगोर के लिए मुक्ति प्रेम के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। वे प्रेम को ही मुक्ति पाने का एकमात्र साधन मानते थे। टैगोर के प्रति प्रेम सर्वोच्च सत्य है। इस मामले में, टैगोर मुक्ति की बौद्ध अवधारणा से सहमत थे और स्वीकार किया कि अविद्या बंधन और सभी कष्टों का मूल कारण या अंतिम कारण है। अत: अविद्या को दूर करने के लिए विद्या जरूरी है। उनका यह भी मानना था कि प्रेम, दान, दया का अभ्यास व्यक्ति को मोक्ष के मार्ग पर ले जा सकता है। दूसरी ओर, स्वामी विवेकानन्दमुक्ति की बौद्ध अवधारणा को अस्वीकार करते हैं और मानते हैं कि

© 2024 EIJO, All Rights Reserved

भक्ति योग, ज्ञान योग और कर्म योग का पालन करके मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। विवेकानन्द के लिए ये तीन योग मोक्ष प्राप्ति का अंतिम मार्ग हैं।

4. भगवान के बारे में टैगोर की अवधारणा पूरी तरह से व्यक्तिगत है। दूसरी ओर, विवेकानन्द इस बात को अस्वीकार करते हैं कि ईश्वर व्यक्तिगत हो सकता है। विवेकानन्द के लिए ईश्वर सदैव निर्वैयक्तिक है। वह बहुलता और धार्मिक बहुलता में विश्वास रखते थे। वे अद्वैत दृष्टि से हिंदू धर्म को शिखर पर रखते हैं। लेकिन उनका सार्वभौमिक धर्म यह भी नहीं दर्शाता कि किसी एक सिद्धांत का पालन किया जाना चाहिए।

5. टैगोर ने निरपेक्ष और ईश्वर के बीच स्पष्ट विभाजन किया। उनका मानना है कि हमारे अंतरात्मा, हमारी आंतरिक व्यक्तिगत आत्मा के भीतर, परमात्मा, सर्वोच्च आत्मा की प्राप्ति पूर्ण पूर्णता की स्थिति में है। (टैगोर, 1915, पृ.88) लेकिन विवेकानन्द पूर्ण को ईश्वर के साथ नहीं मानते। उनके लिए, पूर्णता हमारी सोच से परे है।

समानताएँ: हम इन दो महानतम दार्शनिकों के धार्मिक दर्शन में कई समानताएँ भी देख सकते हैं। उनमें से कुछ हैं-

1. टैगोर और विवेकानंद दोनों का मानना है कि धर्म जीवन का सार है और इसका वर्णन उनके तरीके से किया गया है।
2. ये दोनों अद्वैत वेदांत के अनुयायी थे।
3. ये दोनों अध्यात्मवादी दार्शनिक थे। उन्होंने अपने तरीके से दर्शनशास्त्र की आध्यात्मिक प्रकृति की खोज की।
4. ये दोनों मुक्ति की अवधारणा में विश्वास करते थे।
5. इन दोनों ने अपने धर्म की संकल्पना के माध्यम से विश्व धर्म एवं विश्व बन्धुत्व की स्थापना करने का प्रयास किया।
6. ये दोनों आस्तिक, यथार्थवादी और व्यावहारिक दार्शनिक थे।
7. ये दोनों ही अपने तरीके से विविधता में एकता की अवधारणा पर जोर देते हैं।
8. वे दोनों अपने धर्म के अभ्यास के माध्यम से एक शांतिपूर्ण समाज चाहते थे।

संदर्भ सूची

1. भजनानंद, एस. (2008)। श्री रामकृष्ण और स्वामी विवेकानन्द के दृष्टिकोण से धर्मों का सामंजस्य। रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान: कोलकाता।
2. दास, एस. (1991)। विवेकानन्द, मानव मुक्ति के पैगंबर: स्वामी विवेकानन्द के सामाजिक दर्शन पर एक अध्ययन। एस.एम. बिजया दासगुप्ता: गोल्फ ग्रीन, केजोलकाटा।
3. डाल्टन, डी.जी. (1982)। स्वतंत्रता का भारतीय विचार: स्वामी विवेकानन्द, अरबिंदो घोष, महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर के राजनीतिक विचार। अकादमिक प्रेस: गुड़गांव, हरियाणा।
4. ग्रीन, टी. जे (2016)। धर्मनिरपेक्ष युग के लिए धर्म: मैक्स मुलर, स्वामी विवेकानन्द और वेदांत। रूटलेज टेलर और फ्रांसिस समूह: लंदन और न्यूयॉर्क।
5. ग्रेग, एस.ई. (2019)। स्वामी विवेकानन्द और गैर-हिन्दू परम्परा। टेलर और फ्रांसिस समूह: लंदन और न्यूयॉर्क।
6. निखिलानंद, एस (1953)। विवेकानन्द एक जीवनी. न्यूयॉर्क का रामकृष्ण-विवेकानंद केंद्र: न्यूयॉर्क।
7. टैगोर, आर (1922)। रचनात्मक एकता. मैकमिलन एंड कंपनी लिमिटेड: न्यूयॉर्क।
8. टैगोर, आर. (1978). अधिशेष का दूत. कलकत्ता: विश्वभारती।
9. टैगोर, आर.(1915)। साधना: जीवन का बोध. न्यूयॉर्क: द मैकमिलन कंपनी

© 2024 EIJO, All Rights Reserved

10. टुटेजा, के.एल. एवं के. चक्रवर्ती। (2017)। टैगोर और राष्ट्रवाद. स्प्रिंगर: दिल्ली।
11. तेजसानंद, एस. (1995). स्वामी विवेकानन्द का संक्षिप्त जीवन। अद्वैत आश्रम: कोलकाता।
12. विवेकानन्द. एस. (1931). धर्म का विज्ञान और दर्शन. स्वामी आत्मबोधानंद: कोलकाता।
13. विवेकानन्द, एस. (2015)। ज्ञान योग. प्रभात प्रकाशन: दिल्ली।
14. टैगोर, आर.(2015)। साधना: जीवन का बोध www से लिया गया।
15. रवीन्द्रनाथ टैगोर. (1998)। साधना: जीवन का बोध (1915)। केसिंजर पब।
16. विवेकानन्द, एस., और रामकृष्ण वेदांत केंद्र। (1982)। कर्म-योग ; और, भक्ति-योग। रामकृष्ण-विवेकानंद केंद्र।
17. आहूजा, एन.पी., शिक्षा के सिद्धांत और सिद्धांत, अनमोल पब्लिकेशन प्राइवेट। लिमिटेड नई दिल्ली।
18. चक्रवर्ती, मोहित, आर.एन.टैगोर का शिक्षा दर्शन, अटलांटिक पब्लिशर्स।
19. डाल्टन, डी. जी. (1982)। स्वतंत्रता का भारतीय विचार: स्वामी का राजनीतिक विचार।
20. विवेकानन्द, अरविन्द घोष, महात्मा गाँधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर।अकादमिक प्रेस: गुड़गांव, हरियाणा।
21. दास, एस. (1991). विवेकानन्द, मानव मुक्ति के पैगम्बर: स्वामी विवेकानन्द के सामाजिक दर्शन पर एक अध्ययन। एस.एम. बिजया दासगुप्ता: गोल्फ ग्रीन, कोलकाता।
22. घोष, आर. (2017)। सौंदर्यशास्त्र, राजनीति, शिक्षाशास्त्र, और टैगोर: शिक्षा का एक पारसांस्कृतिक दर्शन। पालग्रेव मैकमिलन: यूके।
23. ग्रीन, टी. जे (2016)। धर्मनिरपेक्ष युग के लिए धर्म: मैक्स मुलर, स्वामी विवेकानन्द, और वेदान्त। रूटलेज टेलर और फ्रांसिस समूह: लंदन और न्यूयॉर्क।
24. ग्रेग, एस.ई. (2019)। स्वामी विवेकानन्द और गैर-हिन्दू परम्परा। टेलर और फ्रांसिस समूह: लंदन और न्यूयॉर्क।
25. गुप्ता, के.एस. (2005)। रवीन्द्रनाथ टैगोर का दर्शन. एशगेट: यूएसए।
26. गुप्ता, एन.एल., आर.एन. टैगोर: एक शैक्षिक विचारक, अनमोल प्रकाशन।
27. होगन, पी. सी और एल. पंडित। (सं.) (2003)। रवीन्द्रनाथ टैगोर: सार्वभौमिकता और परंपरा। रोज़मोंट प्रकाशन: न्यू जर्सी।
28. निखिलानंद, एस (1953)। विवेकानन्द एक जीवनी. न्यूयॉर्क का रामकृष्ण-विवेकानंद केंद्र: न्यूयॉर्क
29. राधाकृष्णन, एस. (1918). रवीन्द्रनाथ टैगोर का दर्शन. मैकमिलन एंड कंपनी लिमिटेड: लंदन।
30. रत्ना रेड्डी, ए.वी. (1984)। स्वामी विवेकानन्द का राजनीतिक दर्शन। स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड: नई दिल्ली।
31. शर्मा, जे. (2013). धर्म का पुनर्कथन: स्वामी विवेकानन्द और राष्ट्रवाद का निर्माण। येल यूनिवर्सिटी प्रेस: न्यू हेवन और लंदन।
32. टैगोर, आर (1922). रचनात्मक एकता. मैकमिलन एंड कंपनी लिमिटेड: न्यूयॉर्क।
33. टैगोर, आर. (1931). मनुष्य का धर्म. मैकमिलन कंपनी: न्यूयॉर्क।

© 2024 EIJO, All Rights Reserved